बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्याय दो

निर्देशात्मक दृष्टिकोण: परमेश्वर और उसका वचन

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ की सेवकाई के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडिओ अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती है और हमारे अध्यायों के अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती है, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं के टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों, संस्थानों, व्यापारों और लोगों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1

स्तर के रूप में परमेश्वर 2

अपने आप में परमेश्वर 2

व्यक्तिगत विशेषता 2

परम स्तर 4

न्यायी के रूप में परमेश्वर 5

आशय 6

स्तर के रूप में वचन 8

तीन श्रेणियां 8

निर्देशात्मक चरित्र 8

सामान्य प्रकाशन 9

विशेष प्रकाशन 12

अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन 14

एकता 19

निष्कर्ष 19

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्याय दो

निर्देशात्मक दृष्टिकोण: परमेश्वर और उसका वचन

परिचय

बच्चे उस समय बहुत ही मनोरंजन करते हैं जब वे नए विचारों को सीखने और उन्हें लागू करने का प्रयास करते हैं। एक दिन मेरे मित्र की चार साल की बेटी रात के खाने से ठीक पहले अपने हाथ में एक कैन्डी लेकर आई और कहा, "डैडी, मुझे यह कैन्डी खाने दो।" आम तौर पर भोजन से पहले उसे कैन्डी खाने की अनुमति नहीं थी, इसलिए उसके पिता ने पूछा, "भोजन से पहले मैं तुम्हें यह कैन्डी क्यों खाने दूं?" और फिर उसने बड़े साहस के साथ उत्तर दिया, "क्योंकि मैंने ऐसा कहा है।"

अब यह स्पष्ट है कि इस छोटी सी बच्ची ने अपना प्रत्युत्तर अपने माता-पिता से ही सीखा था। अतः उसने स्वाभाविक रूप से अपने पिता से अपेक्षा की कि वह इन जादूई शब्दों को सुनते ही उसकी बात माने, "क्योंकि मैंने ऐसा कहा है।" परन्तु यह छोटी बच्ची मानवीय संप्रेषण या बातचीत के विषय में एक आधारभूत बात को नहीं समझी। आज्ञाओं और निर्देशों का अधिकार उस व्यक्ति के आधार पर निर्भर होता है जो उसे कह रहा है। यद्यपि उस छोटी बच्ची ने उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल किया जो उसके माता-पिता करते थे, और उसे आज्ञा माननी जरूरी थी, परन्तु उसके माता-पिता को उसकी बात माननी जरूरी नहीं थी क्योंकि इसे वह कह रही थी।

जब हम मसीही नैतिक शिक्षा पर ध्यान देते हैं, तो हमें इस आधारभूत बात को समझना जरूरी है: नैतिक सिद्धांतों का अधिकार उससे लिया जाता है जो उस बात को कहता है। हमें पवित्रशास्त्र के निर्देश के प्रति स्वयं को क्यों समर्पित करना है? मसीही विश्वास के निर्देशों का हमारे ऊपर अधिकार क्यों है? इसका उत्तर बिल्कुल सीधा है--इन निर्देशों का हमारे ऊपर अधिकार है क्योंकि वे उस परमेश्वर की ओर से आते हैं जिसके पास सारा अधिकार है। हम उनकी पालना करते हैं "क्योंकि उसने ऐसा कहा है।"

यह बाइबल पर आधारित निर्णय लेना पर आधारित दूसरा अध्याय है। अध्यायों की इस श्रृंखला में, हम उस प्रक्रिया पर ध्यान दे रहे हैं जिसका अनुसरण करने के लिए बाइबल कह रही है जब हम नैतिक निर्णय लेते हैं। हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है, "निर्देशात्मक दृष्टिकोण: परमेश्वर और उसका वचन।" और इस अध्याय में नैतिक शिक्षा में अधिकार के प्रश्न, या संक्षिप्त में कहें तो नैतिक शिक्षा में परमेश्वर और उसके वचन के अधिकार के प्रश्न की जांच करेंगे।

पिछले अध्याय में हमने देखा है कि मसीही होने के नाते नैतिक निर्णय लेने में हमें तीन आधारभूत विषयों को देखना जरूरी है: सही स्तर, सही लक्ष्य, सही उद्देश्य। हमने इन विचारों को मसीही नैतिक शिक्षा में निर्देशात्मक, परिस्थिति-संबंधी, और अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण भी कहा था। ऐसे नैतिक निर्णयों को लेना, जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं और उसकी आशीषों की ओर अगुवाई करते हैं, तो हमें प्रासंगिक स्तरों या नियमों पर ध्यान देते हुए विषयों को परिस्थिति-संबंधी दृष्टिकोण से देखना जरूरी है। इस बात के प्रति आश्वस्त रहते हुए कि हमने एक विशेष परिस्थिति के प्रासंगिक तथ्यों और परिणामों का मूल्यांकन जिम्मेदारी के साथ कर लिया है, हमें परिस्थिति-संबंधी दृष्टिकोणों से भी विषयों को देखना जरूरी है। इस बात के प्रति आश्वस्त रहते हुए कि हमारे पास सही उद्देश्य और लक्ष्य हैं, हमें अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण से भी विषयों को देखना जरूरी है। इस अध्याय में हम परमेश्वर और उसके वचन के स्तरों पर ध्यान देते हुए नैतिक निर्णयों को लेने के लिए सही स्तरों हेतु पहले निर्देशात्मक दृष्टिकोण को देखेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस अध्याय को हम दो मुख्य भागों में बांटेंगे: पहले हम हमारे परम स्तर के रूप में स्वयं परमेश्वर को देखेंगे। और दूसरा, हम इस बात को जांचेंगे कि परमेश्वर का वचन किस प्रकार प्रकाशित नैतिक नियम या स्तर के रूप में कार्य करता है। आइए, हम पहले हमारे नैतिक नियम के रूप में स्वयं परमेश्वर पर अपना ध्यान लगाएं।

स्तर के रूप में परमेश्वर

आपको याद होगा कि इस श्रृंखला के हमारे पहले अध्याय में, हमने देखा था कि स्वयं परमेश्वर हमारा परम नैतिक मानक है। वे कार्य जो परमेश्वर के चरित्र के अनुसार होते हैं, वे "अच्छे" और "सही" होते हैं, वहीं वे कार्य जो परमेश्वर के स्तर के अनुसार नहीं होते वे "बुरे" और "गलत" होते हैं। परमेश्वर परम नैतिक मानक है क्योंकि वह अपने से बाहर या ऊपर के किसी स्तर के प्रति उत्तरदायी नहीं है। उसके पास परम नैतिक अधिकार है। किसी और के पास नहीं, मात्र परमेश्वर के पास अच्छे और बुरे को निर्धारित करने का एवं अपने निर्धारणों पर आधारित अनन्त निर्णय देने का परम अधिकार है।

इन विचारों और इनके आशयों को अधिक रूप में समझने के लिए हम हमारे नैतिक स्तर के रूप में परमेश्वर के तीन महत्वपूर्ण पहलुओं पर गहराई से ध्यान देंगे: पहले हम परम नैतिक नियम या स्तर के रूप में परमेश्वर के अपने चरित्र पर ध्यान देंगे। और दूसरा, हम यह देखेंगे कि परमेश्वर परम रूप में नैतिक न्यायी है जो हर व्यक्ति पर अपने अनन्त निर्णयों को सुनाएगा। और तीसरा, हम हमारे नैतिक निर्णयों के लिए इन सत्यों के कुछ आशयों की भी जांच करेंगे। आइए, पहले हम परम नैतिक स्तर के रूप में परमेश्वर के अपने चरित्र को देखें।

अपने आप में परमेश्वर

जब हम परम नैतिक नियम के विषय में स्वयं परमेश्वर के बारे में सोचते हैं तो ऐसे बहुत से विषय हैं जिन्हें संबोधित किया जा सकता है। परन्तु हमारे उद्देश्यों के लिए, हम दो विषयों के बारे में बात करेंगे: पहला, हम परमेश्वर की व्यक्तिगत विशेषता के विषय में अच्छाई के बारे में बात करेंगे। और दूसरा, हम इस तथ्य को देखेंगे कि परमेश्वर की अच्छाई ही संपूर्ण अच्छाई का परम स्तर है।

व्यक्तिगत विशेषता

पहली बात यह है कि जब हम परमेश्वर की व्यक्तिगत विशेषता के रूप में अच्छाई के बारे में बात करते हैं, तो हमारा अर्थ होता है कि वह स्वयं ऐसा स्तर है जिसके द्वारा सारी नैतिकता को मापा जाता है। यद्यपि हम कई बार अच्छाई और उपयुक्तता के भावों के बारे में सैद्धांतिक रूप में बात करते हैं, और यद्यपि हम अच्छाई और सही जैसे शब्दों का इस्तेमाल अव्यक्तिक वस्तुओं और विचारों पर लागू कर सकते हैं, फिर भी ये भाव उचित रूप से बहुत ही आधारभूत बात- परमेश्वर के व्यक्तित्व की अच्छाई- से निकलते हैं। परमेश्वर के चरित्र के अतिरिक्त, अच्छाई और उपयुक्तता जैसी कोई बात नहीं हो सकती। नैतिक मूल्य का अस्तित्व परमेश्वर के प्रतिबिम्ब के रूप में ही है। बहुत ही वास्तविक भाव में वह केवल अच्छा और सही ही नहीं है; वह स्वयं अच्छाई और उपयुक्तता है।

जैसा हमने पहले अध्याय में देखा, ज्योति के रूपक के द्वारा पवित्रशास्त्र इस विचार को दर्शाता है कि परमेश्वर की विशेषताएं परम नैतिक स्तर हैं। 1 यूहन्ना 1:5-7 में प्रेरित यूहन्ना ने सिखाया:

> **परमेश्वर ज्योति है, और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं। यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं; और सत्य पर नहीं चलते। पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। (1 यूहन्ना 1:5-7)**

ज्योति के रूप में परमेश्वर का रूपक मुख्य रूप में एक नैतिक मूल्यांकन है। अंधकार को पाप और झूठ के समरूप समझा जाता है, और ज्योति को सत्य एवं पाप से शुद्धि के साथ जोड़ा जाता है। मूल रूप में, यह अनुच्छेद पाप को परमेश्वर की प्रकृति से भिन्न होने के रूप में परिभाषित करने के द्वारा स्पष्ट करता है कि परमेश्वर सिद्ध रूप में पाप से मुक्त है। दूसरे शब्दों में, यह मानता है कि स्वयं परमेश्वर अच्छाई और उपयुक्तता का परम स्तर है, इसजिए जो कुछ भी परमेश्वर की प्रकृति के विरूद्ध है, वह पाप है।

यीशु ने इसी प्रकार के विचार को मरकुस 10:18 में व्यक्त किया:

> **कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात परमेश्वर। (मरकुस 10:18)**

यह कहने के द्वारा कि कि केवल परमेश्वर ने अच्छाई के स्तर को पूरा किया है, यीशु ने कहा कि वह तुलनात्मक या कृत्रिम अच्छाई की अपेक्षा सिद्ध और संपूर्ण अच्छाई के बारे में बात कर रहा था। आखिरकार, बाइबल दूसरे लोगों को भी अच्छा कहती है। परन्तु परमेश्वर की अच्छाई भिन्न है। दूसरी अच्छाई से विपरीत, यह विशेषता में सिद्ध है, श्रेणी में परम है, और त्रिएकता के व्यक्तित्वों के प्रति अद्वितीय है।

हम सारे पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की श्रेष्ठ अच्छाई के समान कथनों को पाते हैं जैसे कि भजन 5:4 जहां दाऊद ने लिखा:

> **बुराई तेरे (परमेश्वर के) साथ नहीं रह सकती। (भजन 5:4)**

और दानिय्येल 4:37 में जहां गैरयहूदी राजा नबूकदनेज्जर ने भी घोषणा की:

> **उसके सब काम सच्चे, और उसके सब व्यवहार न्याय के हैं। (दानिय्येल 4:37)**

शायद इस विचार को रखने वाला सबसे संक्षिप्त लेख मत्ती 5:48 में पाया जाता है जहां यीशु ने कहा:

> **तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है (मत्ती 5:48)**

इन सारे अनुच्छेदों में हम परमेश्वर को दो रूपों में परम नैतिक व्यवस्था के रूप में प्रकट होते देखते हैं: 1) प्रभु को सिद्धता के शिखर के रूप में, पूर्ण रूप से दोषरहित व्यक्ति के रूप में प्रकट किया गया है; और 2) पवित्रशास्त्र के पाठकों के रूप में हमें परमेश्वर के कार्यों और उसके चरित्र के समक्ष अपनी अच्छाई को मापने के लिए उत्साहित किया जाता है।

इन और अन्य बाइबलीय अनुच्छेदों के आधार पर, हम सही रूप में दावा कर सकते हैं कि अच्छाई और उपयुक्तता को पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप में त्रिएकता के व्यक्तित्वों- पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा- की अनन्त विशेषताओं के रूप में समझा जाना चाहिए। अच्छाई में वे स्वभाव, नैतिक मूल्य, उद्देश्य,

अभिलाषाएं, और लक्ष्य शामिल होते हैं जो जीवित परमेश्वर अपने हृदय में रखता है। अतः अच्छाई के सही स्तर को खोजने के लिए हमें बौद्धिक और नैतिक सिद्धांतों को ही सीखने का प्रयास नहीं करना चाहिए। इसकी अपेक्षा, हमें स्वयं परमेश्वर के हृदय को जानने का प्रयास करना चाहिए।

परम स्तर

दूसरी बात यह है कि जब हम परम नैतिक व्यवस्था के रूप में परमेश्वर के बारे में बात करते हैं, तो हमारा अर्थ यह भी है कि परमेश्वर के व्यक्तित्व से बड़ा कोई स्तर नहीं है। परमेश्वर की अच्छाई सारी अच्छाई का परम स्तर है।

दुर्भाग्यवश, कई लोगों में यह गलत धारणा है कि "अच्छे" की एक परिभाषा है, और यदि परमेश्वर को "अच्छा" या "सही" कहा जाना है तो उसे भी इसी परिभाषा के समक्ष मापा जाना जरूरी है। उदाहरण के तौर पर, कुछ लोग सोचते हैं कि यदि परमेश्वर मनुष्यजाति को दण्ड देता है तो वह अच्छा नहीं हो सकता। कुछ अन्य लोग मानते हैं कि एक अच्छा परमेश्वर बुराई की अनुमति कभी नहीं देगा। और इन संभावनाओं के आधार पर वे गलत रूप में यह मानते हैं कि बाइबल के परमेश्वर को सही रूप में "अच्छा" नहीं माना जा सकता।

दुर्भाग्यवश, यद्यपि मसीही इस निष्कर्ष को नकार देते हैं कि परमेश्वर अच्छा नहीं है, परन्तु फिर भी कुछ विश्वासी भ्रांतिपूर्वक इस बात को स्वीकार कर लेते हैं कि अच्छाई का एक उच्चतर स्तर है जिसके सदृश्य परमेश्वर को भी होना जरूरी है।

अब हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि कभी-कभी बाइबल के लेखक भी परमेश्वर को उसके अपने चरित्र के बाहर के स्तरों से मापते प्रतीत होते हैं। सामान्यतः उन्होंने बाइबल के समक्ष परमेश्वर को मापा। उदाहरण के तौर पर, भजन 119:65, 68 में भजनकार ने लिखा:

> **हे यहोवा, तू ने अपने वचन के अनुसार अपने दास के संग भलाई की है। तू भला है, और भला करता भी है; मुझे अपनी विधियां सिखा। (भजन 119:65, 68)**

पद 65 में भजनकार ने माना कि परमेश्वर का वचन अच्छाई का स्तर है और यह भी दर्शाया कि परमेश्वर के अपने कार्य भी इसी स्तर के द्वारा "अच्छे" माने जाते हैं। और पद 68 में उसने घोषणा की कि परमेश्वर वास्तव में अच्छा है और परमेश्वर के कार्य अच्छे हैं, जो इस बात को दर्शाता है कि यह इसलिए हुआ क्योंकि उसने अपने वचन के अनुसार कार्य किया था। अंत में, भजनकार ने पद 68 को परमेश्वर की विधियों, अर्थात् परमेश्वर की व्यवस्था, को सीखने की इच्छा व्यक्त करने के साथ समाप्त किया, ताकि वह परमेश्वर की अच्छाई के सदृश्य हो सके। सारांश में, इन पदों में भजनकार ने परमेश्वर के कार्यों को परमेश्वर की व्यवस्था के स्तर के समक्ष मापा और परमेश्वर के कार्यों को अच्छा पाया।

परन्तु पवित्रशास्त्र के लेखक यह भी जानते थे कि व्यवस्था परमेश्वर से बाहर नहीं है; बल्कि यह उसी की स्व-अभिव्यक्ति है। उदाहरण के लिए, भजनकार ने बाद में भजन 119:137 और 142 में क्या लिखा:

> **हे यहोवा तू धर्मी है, और तेरे नियम सीधे हैं। तेरा धर्म सदा का धर्म है, और तेरी व्यवस्था सत्य है। (भजन 119:137, 142)**

परमेश्वर की व्यवस्था सही और अच्छी है क्योंकि यह परमेश्वर से आती है, जो स्वयं सही और अच्छा है। क्योंकि वह धर्मी है, इसलिए वह अपनी व्यवस्था सहित जो कुछ भी करता है और जो कुछ भी व्यक्त करता है, वह उसकी अच्छाई को प्रकट करता है। अतः, जब बाइबल के लेखकों ने परमेश्वर की तुलना

व्यवस्था के स्तर के साथ की तब भी उनका अभिप्राय इस बात को दर्शाना ही था कि किस प्रकार व्यवस्था परमेश्वर के चरित्र को अभिव्यक्त करती है।

पवित्रशास्त्र के लेखकों ने कभी यह सिखाने का प्रयास नहीं किया कि परमेश्वर व्यवस्था के उस प्रकार अधीन है जैसे कि मनुष्य। न ही उन्होंने इस बात पर विश्वास किया कि परमेश्वर के लिए व्यवस्था में प्रकट स्तरों का विरोध करना संभव था। बाइबल निरन्तर परम स्तर के रूप में परमेश्वर की अपनी व्यक्तिगत अच्छाई के बारे में बात करती है जिसके द्वारा सभी नैतिक विषयों का मूल्यांकन होना चाहिए।

न्यायी के रूप में परमेश्वर

नैतिक स्तर के परम स्तर होने के अतिरिक्त, हम देखेंगे कि परमेश्वर नैतिकता का परम न्यायी भी है। अर्थात्, उसमें ही यह निर्धारित करने यह विशेषाधिकार है कि कोई कार्य, संवेदनाएं, और विचार उसकी नैतिक मांगों को पूरा करते हैं या उल्लंघन करती हैं। और उसमें ही अपने निर्धारणों को क्रियान्वित करने का परम अधिकार और सामर्थ है।

अब यह सत्य है कि परमेश्वर नैतिक निर्णय लेने की कुछ जिम्मेदारियां मनुष्यों को भी देता है। उदाहरण के लिए, पवित्रशास्त्र के अनुसार, वैधानिक मानवीय प्रशासनों को अच्छाई का सम्मान करने और बुराई को दण्ड देने की सीमित जिम्मेदारी दी गई है। परन्तु बाइबल यह भी सिखाती है कि हमारे मानवीय निर्णय तब तक ही सही और वैध होते हैं जब तक वे परमेश्वर के निर्णयों को प्रकट करते हैं। यीशु ने स्वयं यह स्पष्ट किया कि अंतिम दिन स्वयं परमेश्वर उनके कार्यों के द्वारा सब लोगों का न्याय करेगा, और इस प्रकार वह मनुष्यजाति द्वारा लिए गए सारे निर्णयों की पुष्टि करेगा या उनकी निन्दा करेगा। उस समय वह उनको श्राप देगा जिनके कार्य बुरे हैं, और वह उन्हें आशीष देगा जिनके कार्य अच्छे हैं।

यूहन्ना 5:27-30 इस विषय पर यीशु के शब्दों को दर्शाता है:

> (पिता ने) उसे (पुत्र को) न्याय करने का भी अधिकार दिया है,... जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्हों ने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्हों ने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।... मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूँ। (यूहन्ना 5:27-30)

इस जीवन में हम चाहे जैसे भी नैतिक निष्कर्षों पर पहुंचें, स्वयं परमेश्वर ब्रह्मांड का सबसे बड़ा न्यायालय है। वह अंतिम निर्णय लेगा कि हमने नैतिकता के साथ जीवन बिताया है या नहीं- और उसके निर्णय पूरी तरह से स्थाई होंगे। ऐसा कोई आधार नहीं है जिसमें कोई परमेश्वर के अधिकार को चुनौती दे सके। सारा अधिकार और सारी सामर्थ उसी के पास है, जिससे उसके निर्णयों को बदलने का कोई तरीका नहीं है। अय्यूब 40:2-14 में इस विषय पर अय्यूब से कहे परमेश्वर के वचनों को सुनें:

> क्या जो बकवास करता है वह सर्वशक्तिमान से झगड़ा करे?... क्या तू मेरा न्याय भी व्यर्थ ठहराएगा? क्या तू आप निर्दोष ठहरने की मनसा से मुझ को दोषी ठहराएगा? क्या तेरा बाहुबल ईश्वर के तुल्य है? क्या तू उसके समान शब्द से गरज सकता है? अब अपने को महिमा और प्रताप से संवार और ऐश्वर्य, और तेज के वस्त्र पहिन ले।... तब मैं भी तेरे विषय में मान लूंगा, कि तेरा ही दहिना हाथ तेरा उद्धार कर सकता है। (अय्यूब 40:2-14)

न्याय करना परमेश्वर का अधिकार है क्योंकि उसके पास परम अधिकार है। और उसके निर्णय अपरिहार्य हैं क्योंकि उसके पास परम सामर्थ है। यद्यपि परमेश्वर के रचे गए प्राणी उसके अधिकार और सामर्थ से बचना चाहें, परन्तु वे ऐसा कर नहीं सकते।

अंतिम विश्लेषण में केवल दो विकल्प हैं: या तो हम मसीह के द्वारा उसकी दया में शरण पाने में स्वयं को उसके प्रति समर्पित करते हैं, या हम उसकी अनाज्ञाकारिता करते हैं और अनन्त दण्ड भोगते हैं। और यदि हम परमेश्वर को अप्रसन्न करने और उसके निर्णयों पर अविश्वास करने की परीक्षा में पड़ते हैं तो हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि उसके सारे निर्धारण न्यायी और सही हैं। वह मनमौजी नहीं है, परन्तु सदैव अपने चरित्र के अपरिवर्तनीय स्तर के अनुसार न्याय करता है। जैसा एलीहू ने अय्यूब 34:10-12 में तर्क दिया:

> **यह सम्भव नहीं कि ईश्वर दुष्टता का काम करे, और सर्वशक्तिमान बुराई करे। वह मनुष्य की करनी का फल देता है, और प्रत्येक को अपनी अपनी चाल का फल भुगताता है। निःसन्देह ईश्वर दुष्टता नहीं करता और न सर्वशक्तिमान अन्याय करता है। (अय्यूब 34:10-12)**

नैतिकता के परम न्यायी होने के रूप में, परमेश्वर अपने हरेक निर्णय में अपने चरित्र के परम नैतिक स्तर को निरन्तर रूप में लागू करता है। उसके निर्णय सिद्ध होते हैं, जो त्रुटिरहित विचार और बुद्धि, असीम निष्पक्षता और दोषरहित नैतिकता को प्रकट करते हैं।

एक परम मानक और परम न्यायी के रूप में परमेश्वर को समझने के साथ, आइए हम अपने ध्यान को हमारे जीवनों में इन विषयों के कुछ आशयों की ओर लगाएं।

आशय

जब हमने परमेश्वर को परम नैतिक स्तर के रूप में कहा था, तो हमने अपने आप में परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में कहा था। और जब हमने परमेश्वर को नैतिकता के परम न्यायी के रूप में कहा था तो हमने मुख्य रूप से अपनी सृष्टि के साथ उसके संबंधों पर ध्यान दिया था। इस बिंदू पर, हम हमारे ध्यान को इस बात की ओर लगाएंगे कि न्याय करने में परमेश्वर की सामर्थ और अधिकार उसके द्वारा रचे गए प्राणियों को उसके चरित्र के स्तर के अनुसार जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं।

उदाहरण के तौर पर, आपको याद होगा कि 1 पतरस 1:15-16 में पतरस ने अपने पाठकों को इस प्रकार निर्देश दिया:

> **जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ। (1 पतरस 1:15-16)**

इस अनुच्छेद में पतरस ने उसी बात की पुष्टि की जिसे हम पहले ही कह चुके थे, वह यह है कि परमेश्वर का चरित्र सारे मानवीय व्यवहार का परम स्तर है। परन्तु उसने इस विचार को इस बात पर बल देते हुए लागू किया कि क्योंकि परमेश्वर सारे मानवीय व्यवहार का स्तर है, इसलिए मनुष्यजाति को परमेश्वर की आज्ञा माननी और उसका अनुसरण करना आवश्यक है।

निसंदेह, यह अनुभव करना महत्वपूर्ण है कि जब हम परमेश्वर का अनुसरण करने की बात कहते हैं तो हम सृष्टिकर्त्ता और सृष्टि के बीच के अंतर को धुंधला करने के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। बल्कि, हम उसके चरित्र को दर्शाने के हमारे उत्तरदायित्व के बारे में बात कर रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, जब पतरस ने लिखा

कि हमें पवित्र बनना है क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, तो उसका अर्थ था कि परमेश्वर का चरित्र इस बात को बताता है कि पवित्रता क्या है, और क्योंकि परमेश्वर अपनी पवित्रता के अनुसार कार्य करता है, इसलिए हमें भी उसकी पवित्रता के अनुसार कार्य करना चाहिए।

ऐसे ही एक विचार को हम पहाड़ी उपदेश में पाते हैं। मत्ती 5:44-48 में यीशु ने कहा:

> अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिये प्रार्थना करो। जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनो पर अपना सूर्य उदय करता है, और धमिर्यों और अधमिर्यों दोनों पर मेंह बरसाता है... सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है। (मत्ती 5:44-48)

क्योंकि परमेश्वर का व्यवहार भी सिद्ध रूप में अच्छा और नैतिक है, इसलिए यह स्थाई नैतिक स्तर भी है। अतः यह प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मदारी है कि वह परमेश्वर के कार्यों के स्तर के अनुरूप बनकर परमेश्वर की आज्ञा माने।

अब हम में से अधिकांश लोगों के लिए यह अर्थ स्पष्ट होगा। आखिरकार, यदि परमेश्वर वह परम अधिकार है जो एक परम स्तर के प्रति हमें उत्तरदायी ठहराता है, तो इसे इस बात को मानना चाहिए कि हम उस स्तर का पालन करने के प्रति जिम्मेदार हैं। वास्तविकता में, बहुत से लोग जब परमेश्वर के सर्वोच्च अधिकार और धर्मी स्तर का सामना करते हैं तो वे परमेश्वर की आज्ञाओं का निरादर करते हैं और अपने जीवनों के लिए अपने नियमों को बना लेते हैं।

कुछ मानते हैं कि यदि परमेश्वर में न्याय करने की सामर्थ है, फिर भी उसके पास वह अधिकार नहीं है। वे परिणामों की परवाह किये बिना यह भी मान सकते हैं कि परमेश्वर का विरोध करना सम्मानयोग्य और अच्छा है, ठीक उसी प्रकार जैसे कि कोई एक बुरे मानवीय तानाशाह का विरोध करता है।

हम मसीही क्षेत्रों में भी इस प्रकार के स्वभाव को देखते हैं। उदाहरण के लिए, कलीसिया में अनेक लोग मानते हैं कि क्योंकि यीशु हमारे पापों के लिए मरा, इसलिए परमेश्वर हमारी आज्ञाकारिता की मांग नहीं करता। वे क्षमा को अनुमति के साथ उलझा देते हैं, और गलत रूप में कल्पना करते हैं कि क्योंकि हमारे सारे पाप क्षमा हो चुके हैं, तो हम जैसे चाहे वैसे जी सकते हैं। परन्तु सत्य यह है कि विश्वासियों को भी परमेश्वर के चरित्र के स्तर के अनुसार जीना जरूरी है। सुनिए किस प्रकार 1 यूहन्ना 1:7 में यूहन्ना ने लिखा:

> पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। (1 यूहन्ना 1:7)

इस अध्याय में यूहन्ना ने कम से कम दो बातें कहीं जो हमारे विचार-विमर्श के लिए प्रत्यक्ष रूप से प्रासंगिक हैं। पहला, यह सिखाते हुए कि हम सब "जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही ज्योति में चलें,"। यूहन्ना ने दर्शाया कि सभी विश्वासियों की जिम्मेदारी है कि वे परमेश्वर का अनुसरण करें। दूसरा, यूहन्ना ने कहा कि परमेश्वर के स्तर को मानने की हमारी जिम्मेदारी मसीह में हमारी क्षमा से संबंधित है। जब हम परमेश्वर का अनुसरण करते हैं तब ही मसीह का लहू हमें पापों से साफ करता है। हम तब तक यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में नहीं पा सकते जब तक हम प्रभु के रूप में उसकी आज्ञा मानने के प्रति प्रेरित नहीं होते।

इस बात को ध्यान से देखने के बाद कि परमेश्वर स्वयं परम नैतिक मानक है, अब हम नैतिक शिक्षा में निर्देशात्मक दृष्टिकोण के इस अध्ययन में हमारे दूसरे मुख्य शीर्षक की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं, जो है: हमारे प्रकाशित नैतिक मानक के रूप में परमेश्वर का वचन।

स्तर के रूप में वचन

हमने कई तरीके देखें हैं जिनमें बाइबल यह दर्शाती है कि स्वयं परमेश्वर हमारा परम नैतिक मानक है। परन्तु वास्तविकता यह है कि हम ही जानते हैं कि परमेश्वर कैसा है क्योंकि उसने स्वयं को वचन के माध्यम से हमारे समक्ष प्रकट किया है। इस प्रकाशन के बिना, उसका चरित्र रहस्यमयी और अनजान होगा जिससे हम उसके उदाहरण का अनुसरण करने की हमारी जिम्मेदारी को पूरा नहीं कर सकेंगे। सौभाग्य से, परमेश्वर का प्रकाशन हमें उसके चरित्र के बारे में बहुत बातें सिखाता है, और हमें ऐसे अच्छे नैतिक निर्णयों को लेने में सहायता करते हैं जो उसके स्तर को दर्शाते हैं। अतः जब हम इस बात पर बल देते हैं कि स्वयं परमेश्वर हमारा परम मानक है, तो हमारे व्यावहारिक मानक के रूप में हमें उसके प्रकाशन या वचन पर निर्भर होना चाहिए।

यह देखने के लिए कि किस प्रकार परमेश्वर का वचन हमारा प्रकाशित नैतिक मानक है, हम तीन विषयों पर ध्यान देंगे: पहला, हम प्रकाशन की तीन श्रेणियों को देखेंगे। दूसरा, हम प्रकाशन की इन तीनों श्रेणियों के निर्देशात्मक चरित्र के बारे में बात करेंगे। और तीसरा, हम प्रकाशित मानकों की इन तीन श्रेणियों की एकता को देखेंगे।

तीन श्रेणियां

मसीही नैतिक शिक्षा के हमारे ज्ञान में आगे बढ़ने के लिए सबसे पहले हमें इस बात को अच्छी तरह से समझना है कि परमेश्वर ने स्वयं को तीन रूपों में प्रकट किया है।

पारंपरिक रूप में, धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर के प्रकाशन के बारे में मुख्य रूप से दो श्रेणियों में बात की है: विशेष प्रकाशन और सामान्य प्रकाशन। विशेष प्रकाशन की श्रेणी में, उन्होंने परमेश्वर की ओर से सीधी बातचीत, जैसे कि पवित्रशास्त्र, भविष्यवाणी, स्वप्नों, दर्शनों, को रखा है। सामान्य प्रकाशन की श्रेणी में इतिहास, ब्रह्मांड, मौसम, पौधे, जानवर और मानवजाति आते हैं। सरल रूप में कहें तो सामान्य प्रकाशन वह संपूर्ण श्रेणी है जो उस सब को अपने अंदर समाहित कर लेता है जिसे विशेष प्रकाशन नहीं माना जाता।

जहां यह पारंपरिक प्रक्रिया कुछ रूपों में सहायक है, वहीं यह हमारे ध्यान को परमेश्वर के प्रकाशन के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं से हटा देती है। इसलिए, इस अध्याय में हम अस्तित्व संबंधी दृष्टिकोण के बारे में बात करेंगे, अर्थात् वह प्रकाशन जो मनुष्यों में परमेश्वर का प्रकाशन है, वह प्रकाशन जो प्रायः सामान्य प्रकाशन के साथ जोड़ा तो जाता है परन्तु जो वास्तव में अलग रूप में देखने के योग्य हैं।

प्रकाशन की इन श्रेणियों को मन में रखते हुए, हम इस अवस्था में हैं कि हम यह देखें कि किस प्रकार परमेश्वर का संपूर्ण प्रकाशन हमें वह मानक प्रदान करता है जो परमेश्वर के चरित्र को प्रकट करता है और हमें नैतिक निर्णय लेने में अगुवाई करता है।

निर्देशात्मक चरित्र

सबसे पहले हम सामान्य प्रकाशन में पाए जाने वाले परमेश्वर के वचन के निर्देशात्मक पहलुओं को देखेंगे, दूसरा, विशेष प्रकाशन के मानकों को देखेंगे, और तीसरा, प्रकाशित स्तर के रूप में अस्तित्व संबंधी प्रकाशन को देखेंगे। आइए अब हमारे ध्यान को इस बात पर लगाएं कि परमेश्वर का सामान्य प्रकाशन किस प्रकार हमारे ऊपर अधिकार के रूप में कार्य करता है।

सामान्य प्रकाशन

जब हम सामान्य प्रकाशन के बारे में बात करते हैं, तो हम उन बातों पर ध्यान देते हैं कि सृष्टि और इतिहास परमेश्वर के बारे में सच्ची बातों को और हमारे प्रति उसकी नैतिक मांगों को किस प्रकार बताते हैं। निस्संदेह, सामान्य प्रकाशन हमें सब कुछ नहीं सिखा सकता। उदाहरण के तौर पर, कुछ बातों, जैसे कि यीशु मसीह के द्वारा उद्धार, को केवल विशेष प्रकाशन के द्वारा ही सिखाया जाता है, और परमेश्वर की इच्छा के कुछ और पहलू मुख्य रूप से अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन से हमारे पास आएंगे। और बाइबल इस बात पर भी बल देती है कि जब आदम और हव्वा पाप में गिरे तो यह रचित जगत भी उसके साथ गिर गया, जिससे पूरी प्रकृति भ्रष्ट हो गई। परिणामस्वरूप, सृष्टि और इतिहास व्याख्या करने के लिए मुश्किल है, वे परमेश्वर के चरित्र की बहुत ही स्पष्ट तस्वीर अब प्रस्तुत नहीं करतीं। फिर भी, बाइबल हमें आश्वस्त करती है कि सामान्य प्रकाशन परमेश्वर के बारे में सच्ची बातें सिखाने के लिए आज भी बहुत ही स्पष्ट रूप में बात करता है, यह परमेश्वर के चरित्र का सिद्ध स्तर प्रकट करता है और इस प्रकार परमेश्वर के एक प्रकाशित मानक के रूप में कार्य करता है।

जब सामान्य प्रकाशन मसीही नैतिक शिक्षा पर लागू किया जाता है तो हम इसके दो महत्वपूर्ण चरित्रों के बारे में बात करेंगे: इसकी जटिलता, और इसका महत्व।

जटिलता। पहली बात यह है कि सामान्य प्रकाशन जटिल है। मसीहियों के लिए सामान्य प्रकाशन के बारे में बहुत ही सामान्य रूप में सोचना आम बात है, जैसे कि सामान्य प्रकाशन का हर प्रारूप एक समान हो। वास्तविकता में, सामान्य प्रकाशन की श्रेणी में सामान्यपन और विशेषपन के भिन्न-भिन्न स्तर पाए जाते हैं। सामान्य प्रकाशन के कुछ पहलू सब लोगों के लिए आम हैं, वहीं अन्य सीमित समूहों के लोगों तक ही सीमित होते हैं। कुछ पहलू अपने अर्थ में अस्पष्ट होते हैं, वहीं कुछ काफी स्पष्ट होते हैं। कुछ पहलू परमेश्वर की सक्रिय, प्रतिदिन सहभागिता के किसी संकेत के बिना प्राकृतिक नियम का अनुसरण करते हैं, वहीं कुछ स्पष्ट रूप में परमेश्वर के अलौकिक हस्तक्षेप को दिखाते हैं।

उदाहरण के तौर, विषय के एक सिरे को देखें, सूर्य का प्रचलित सामान्य प्रकाशन। संसार के इतिहास के लगभग सब लोगों ने सूर्य और उसके प्रभावों को देखा है। और सूर्य में, उन्होंने परमेश्वर के स्व-प्रकाशन को देखा है। यह शायद सामान्य प्रकाशन का सबसे सामान्य प्रकाशन है। परन्तु इस बात पर भी ध्यान दें कि सूर्य और उसके प्रभावों को देखने पर सारे लोग एक विशेष नैतिक प्रत्युत्तर देने के लिए प्रेरित होते हैं, जिसका वर्णन यीशु ने मत्ती 5:44-45 में किया:

> अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिये प्रार्थना करो। जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनो पर अपना सूर्य उदय करता है, और धमिर्यों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है। (मत्ती 5:44-45)

यह सच्चाई कि सूर्य बुरे लोगों पर भी उदय होता है, उन्हें गर्मी देता है, और उनकी फसलों को बढ़ने में सहायता करता है, इस बात को दर्शाती है कि परमेश्वर उन पापियों के प्रति भी दयावान रहता है जो उनसे घृणा करते हैं। और क्योंकि सारी मानवजाति परमेश्वर के चरित्र का अनुसरण करने के प्रति जिम्मेदार है, इसलिए हम सब हमारे शत्रुओं से प्रेम करने और उनके लिए प्रार्थना करने के प्रति जिम्मेदार हैं।

विषय के दूसरे सिरे पर, कुछ सामान्य प्रकाशन की यह जानकारी बहुत ही कम लोगों को होती है कि यह विशेष प्रकाशन के समान प्रतीत होता है। उदाहरण के तौर पर, यीशु मसीह के जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान को देखें। जैसा कि हम कह चुके हैं, इतिहास सामान्य प्रकाशन का हिस्सा है। जैसा कि हम देखते

हैं जिन घटनाओं की परमेश्वर अनुमति देता है और किस प्रकार वह सारे समय में जगत का संचालन करता है, तो हम उसके विषय में बहुत कुछ सीखते हैं। और छुटकारे का इतिहास, विशेषकर यीशु मसीह का कार्य, हमें परमेश्वर के बारे में, स्वयं के बारे में, और उद्धार के बारे में बहुत कुछ बताता है।

सुनिए किस प्रकार पौलुस ने प्रेरितों के काम 17:30-31 में पुनरूत्थान के इतिहास का वर्णन किया।

> **इसलिये परमेश्वर आज्ञानता के समयों में अनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है। (प्रेरितों के काम 17:30-31)**

पौलुस ने तर्क दिया कि यीशु मसीह के पुनरूत्थान की ऐतिहासिक सच्चाई इस बात का प्रमाण थी कि परमेश्वर ने एक दिन नियुक्त किया है जब वह सारे जगत का न्याय करेगा। उसने यह भी तर्क दिया कि न्याय का आने वाला दिन सब स्थानों के सब लोगों को पश्चाताप करने के लिए प्रेरित करता है। दूसरे शब्दों में, पुनरूत्थान की ऐतिहासिक सच्चाई का सामान्य प्रकाशन सब लोगों को प्रेरित करता है।

इस प्रकार का सामान्य प्रकाशन विशेष प्रकाशन के बहुत समान है क्योंकि यह दुर्लभ और विचित्र है। ज्यादा लोगों ने नहीं देखा जब यीशु इस जगत में रहा और मरा। और उसका जीवन और मृत्यु बहुत ही आसाधारण थे; वे अन्य किसी मानवीय जीवन और मृत्यु से भिन्न थे। उसका पुनरूत्थान तो चमत्कारी था। फिर भी, वे विशेष प्रकाशन के स्तर तक नहीं पहुंचते क्योंकि वे इस बात को नहीं बताते कि हमें किस प्रकार से पश्चाताप करना है या परमेश्वर के प्रति कितना समर्पण जरूरी है।

महत्व। दूसरी बात यह है कि मसीही नैतिक शिक्षा में हमें नैतिक निर्णय लेने में सामान्य प्रकाशन के महत्व की पुष्टि करना जरूरी है। परमेश्वर अपने चरित्र के उन पहलुओं के प्रति मनुष्यजाति को उन्हें पहचानने और उनके सदृश्य बनने के प्रति उत्तरदायी ठहराता है जो सृष्टि और इतिहास के माध्यम से उनके समक्ष प्रकट किए गए हैं।

पहले तो अनेक मसीहियों को यह विचित्र प्रतीत होगा कि हम उस को इतना अधिक महत्व दें जो हम परमेश्वर के बारे में सृष्टि और इतिहास से सीखते हैं। आखिरकार, प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान की एक विशिष्टता यह है कि हम प्रकाशन के अन्य सभी प्रकाशनों से अधिक पवित्रशास्त्र पर बल देते हैं। परन्तु सच्चाई यह है कि हमारे समय में यद्यपि हम सही रूप में पवित्रशास्त्र को प्रकाशन के सबसे सर्वोच्च रूप में दर्शाते हैं, फिर भी प्रोटेस्टेंट लोगों ने सामान्य प्रकाशन की वैधता और स्थिर अधिकार की सदैव पुष्टि की है। उदाहरण के तौर पर, विश्वास का वेस्टमिनस्टर अंगीकरण इन शब्दों के साथ अध्याय 1 के खण्ड 1 में आरंभ होता है:

> **प्रकृति का प्रकाश, और सृष्टि एवं ईश्वरीय विधान के कार्य परमेश्वर की अच्छाई, बुद्धि और सामर्थ को इतना प्रकट करते हैं कि मनुष्य को कोई बहाना नहीं सूझता; परन्तु फिर भी वे परमेश्वर के उस ज्ञान, और उसकी इच्छा, जो उद्धार के लिए आवश्यक है, को प्राप्त करने के योग्य नहीं है।**

परमेश्वर ने अपनी रचनाओं और उन रचनाओं के साथ अपने परस्पर संबंध के माध्यम से अपने चरित्र को प्रकट किया है। और क्योंकि स्वयं परमेश्वर हमारा परम मानक है, तो हम उसके उस स्व-प्रकाशन को मानने के लिए प्रेरित होते हैं जो हमारे पास सामान्य प्रकाशन से आता है। पौलुस ने इन विचारों को रोमियों 1:18-20 में व्यक्त किया, जहां उसने लिखा:

> **परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। इसलिये कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उन के मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते है, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। (रोमियों 1:18-20)**

सामान्य प्रकाशन परमेश्वर के बारे में विश्वास का एक स्तर या मानक है जो सब लोगों पर लागू होता है। और क्योंकि सामान्य प्रकाशन एक स्थिर मानक है, इसलिए जो कोई परमेश्वर के प्रकाशन के विपरीत कार्य करता है वह पाप करने का दोषी ठहरता है।

यही विचार रोमियों 1:32 में और स्पष्टता से प्रकट होता है जहां पौलुस ने इसे उन पर लागू किया जो परमेश्वर को ठुकरा देते हैं जब वह स्वयं को सृष्टि में प्रकट करता है:

> **वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं, कि ऐसे ऐसे काम करने वाले मुत्यु के दण्ड के योग्य हैं। (रोमियों 1:32)**

यहां पौलुस ने सामान्य प्रकाशन को "विधि" कहा है। अंग्रेजी के कुछ अन्य अनुवाद इसे "अध्यादेश" या "निर्णय" कहते हैं। परन्तु आधारभूत विचार स्पष्ट है: सामान्य प्रकाशन एक प्रकट स्तर है जो हरेक के समक्ष स्पष्ट है और जिसकी परमेश्वर प्रत्येक को आज्ञा मानने का आदेश देता है।

अब अनेक लोग पौलुस के इस मूल्यांकन से असहमत होंगे कि यह स्तर सब लोगों के समक्ष स्पष्ट है। हम में से कुछ लोग निसंदेह महसूस करते हैं कि हमने इन बातों को सृष्टि से नहीं सीखा, और कि यह जानकारी इतनी विशिष्ट है कि प्रकृति और और इतिहास से नहीं जानी जा सकती। यही बात पौलुस के दिनों में भी थी, इसलिए पौलुस ने इस विचार-विमर्श को शामिल किया कि कई लोग सामान्य प्रकाशन से इन बातों को क्यों नहीं समझते। रोमियों 1:21 में उसने स्पष्ट किया:

> **इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उन का निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। (रोमियों 1:21)**

पौलुस कह रहा था कि यद्यपि सामान्य प्रकाशन हमसे स्पष्टता से बात करता है, फिर भी हम दूसरे अर्थों को ज्यादा महत्व देते हुए इसके स्पष्ट अर्थ को ठुकरा देते हैं। प्राचीन विश्वासियों ने झूठे देवताओं की रचना की। आधुनिक विश्वासी आम तौर पर सृष्टि को एक संयोग मानते हैं। और कई मसीही भी आधुनिक अविश्वास की आंखों से सृष्टि को देखने के अभ्यस्त हो गए हैं। फिर भी, सृष्टि में परमेश्वर का प्रकाशन अभी भी स्थिर या बना हुआ है। यह अभी भी परमेश्वर का प्रकाशित स्तर है जिसके सदृश्य हमें बनना है।

शायद पौलुस इस बात को भजन 19 से ले रहा था जहां दाऊद ने पद 1 में लिखा:

> **आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है, और आकशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है। (भजन 19:1)**

प्रत्येक रूप में, स्वर्ग और शेष रचित संसार शायद सामान्य प्रकाशन के सबसे सामान्य पहलू हैं। अधिकांश लोग जो अब तक इस जगत में रहे हैं, वे इस आकाश की विशालता को देखते रहे हैं। इस प्रकार

का ज्ञान बहुत ही आम है। और यदि सामान्य प्रकाशन की सबसे सामान्य बात स्थिर और आधिकारिक है, तो सामान्य प्रकाशन के विशेष प्रारूप भी आधिकारिक हैं।

यह देखने के बाद कि सामान्य प्रकाशन कई रूपों में आता है और कि वे सब रूप परमेश्वर के मानकों को प्रकट करते हैं, अब हमें विशेष प्रकाशन को परमेश्वर की ओर से प्रकट एक अन्य मानक के रूप में देखना है।

विशेष प्रकाशन

चाहे हमें इस बात पर विश्वास करना सरल लगता हो या नहीं कि सामान्य प्रकाशन हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर का प्रकाशित स्तर है, फिर भी सभी मसीहियों को सरलता से पहचान लेना चाहिए कि विशेष प्रकाशन ऐसा मानक है जो हमारे जीवनों पर लागू होता है। जिस प्रकार हमने सामान्य प्रकाशन के साथ किया, हम मसीही नैतिक शिक्षा पर विशेष प्रकाशन की जटिलता और उसके महत्व पर ध्यान देंगे।

जटिलता। पहली बात यह है कि विशेष प्रकाशन जटिल है जो हमारे समक्ष कई रूपों में आता है। इनमें से अधिकांश रूप मौखिक या लिखित वचन पर निर्भर होते हैं, परन्तु उन सब में परमेश्वर द्वारा अपने लोगों से इन रूपों में बात करना शामिल होता है जो सृष्टि के सामान्य क्रियाकलापों से बाहर के होते हैं। जब हम पवित्रशास्त्र का सर्वेक्षण करते हैं, तो हम विशेष प्रकाशन के अनेक भिन्न-भिन्न उदाहरणों को पाते हैं। कुछ विषयों में परमेश्वर दृष्टिगोचर रूप में प्रकट होता है और समूहों एवं व्यक्तिगत लोगों से ऐसे बात करता है जिसे सुना जा सके। अन्य विषयों में उसे सुना तो जाता है पर देखा नहीं जाता। फिर अन्य समयों में वह एक मध्यस्थ के माध्यम से बात करता है जैसे कि स्वर्गदूत जो उसके लोगों के समक्ष प्रकट होता है। परमेश्वर उन्हें भी आम तौर पर निर्देश देता है जिन्होंने उसके विशेष प्रकाशन को प्राप्त किया है कि वे उस बात को लिख लें जो प्रकट किया गया है, और इस लिखित ब्यौरे को पवित्रशास्त्र कहा गया जो विशेष प्रकाशन का एक और रूप है।

अब, विशेष प्रकाशन के ये अलग-अलग प्रकार चाहे जितने भी भिन्न क्यों न हों, वे सब एक भाव में "विशेष" हैं क्योंकि वे परमेश्वर और मनुष्य के बीच असाधारण या अलौकिक बातचीत का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमें हम पाते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ और अधिक प्रत्यक्ष रूप में बातचीत करने के लिए प्राकृतिक घटनाओं के बहाव में हस्तक्षेप करता है।

परन्तु यद्यपि ये भिन्न प्रकार के प्रकाशन इस साझे बंधन को रखते हैं, फिर भी हम इनके बीच अंतर देख सकते हैं क्योंकि कुछ कम मध्यस्थता के साथ सीधे परमेश्वर से आते हैं। वे जो अधिक दूर की मध्यस्थता से आते हैं, वे सबसे कम "विशेष" होते हैं; हम उनके विषय में ऐसे सोचते हैं कि वे सामान्य प्रकाशन के हाशिए पर पाए जाते हैं। वे जो सीधे परमेश्वर की ओर से आते हैं, सबसे अधिक "विशेष" होते हैं।

मूसा ने परमेश्वर से प्रत्यक्ष रूप से और व्यक्तिगत रूप में बात की। जैसा कि हम निर्गमन 33:11 में पढ़ते हैं:

> **यहोवा मूसा से इस प्रकार आमने-सामने बातें करता था, जिस प्रकार कोई अपने भाई से बातें करे। (निर्गमन 33:11)**

विशेष प्रकाशन के दूसरे सिरे पर हम स्वप्नों जैसी बातों को पाते हैं। स्वप्नों में विशेष प्रकाशन का महत्व इस बात में नहीं पाया जाता कि एक व्यक्ति स्वप्न देखता है, परन्तु इस बात में कि परमेश्वर लोगों को सत्य बताने के लिए इस प्राकृतिक प्रक्रिया का इस्तेमाल करता है।

उदाहरण के तौर पर, उत्पत्ति 41 में हम सात पतली गायों के बारे में फिरौन के स्वप्न को पाते हैं जिन्होंने सात मोटी गायों को खा लिया था। निश्चित रूप से फिरौन जानता था कि यह स्वप्न अलौकिक था, और यह अपने सलाहकारों से उसकी व्यख्या करने के आग्रह से प्रमाणित होता है। परन्तु फिरौन को कैसे पता चला कि उसका स्वप्न अलौकिक था? परमेश्वर ने स्वप्न में प्रत्यक्ष रूप से फिरौन को संबोधित नहीं किया, और न ही उससे बात करने के लिए किसी स्वर्गदूत को भेजा जैसा कि उसने मत्ती 1 में यूसुफ के लिए किया था। फिरौन के स्वप्न के बारे में विशेष बात यह थी कि परमेश्वर ने इसका प्रयोग फिरौन से बात करने के लिए किया। परमेश्वर द्वारा स्वप्न के प्रयोग के बिना, यह प्रकाशन उन स्वप्नों जैसा ही था जो सामान्य प्रकाशन के रूप में ही घटित होते हैं।

सारांश में, कुछ विशेष प्रकाशन अद्‌भुत होते हैं और स्पष्टतः अलौकिक होते हैं, जैसे कि मूसा जैसे लोगों के साथ परमेश्वर की प्रकट उपस्थिति। परन्तु, अन्य विशेष प्रकाशन सामान्य, प्राकृतिक मानवीय जीवन के समान दिखते हैं।

हमारे समय में विशेष प्रकाशन का सबसे सामान्य रूप (और वर्तमान प्रकाशन का सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत रूप) पवित्रशास्त्र है। और पवित्रशास्त्र में भी ऐसे भाग हैं जो बहुत विशेष हैं और अन्य भाग हैं जो थोड़े सामान्य हैं। उदाहरण के तौर पर, निर्गमन 31:18 के अनुसार परमेश्वर ने दस आज्ञाओं को लिखा जो "उसकी उंगली से लिखी हुई साक्षी देनेवाले पत्थर की तख्तियों" पर लिखी गईं थीं।

अन्य लेख मूल रूप में अन्यजातियों द्वारा लिखे गए थे जिन्होंने सामान्य प्रकाशन की व्याख्या की थी। उदाहरण के तौर पर, प्रेरितों के काम 17:28 में पौलुस ने यूनानी श्रोताओं को ये शब्द लिखे:

> **जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम तो उसी के (परमेश्वर के) वंश भी हैं। (प्रेरितों के काम 17:28)**

यहां पौलुस ने अन्यजातिय कवि के निष्कर्षों की पुष्टि की, और इस अन्यजातिय कवि के शब्द विशेष प्रकाशन का हिस्सा बन गए।

कुछ और सामान्य लेखों में बाइबलीय लेखकों द्वारा संकलित कुछ नीतिवचन, अन्यजातिय कवियों से उद्धृण, और एज्रा 4 में फारस के राजा अर्तक्षत्र एवं फरात के पार के क्षेत्रों में रहने वाले उसके सेवकों के बीच लिखे पत्रों की प्रतियां शामिल हैं।

विशेष प्रकाशन जटिल है, जो कई रूपों में हमारे समक्ष आता है। उनमें से अधिकांश प्रारूप मौखिक या लिखित वचन पर निर्भर होता है, परन्तु उन सब में उन रूपों में परमेश्वर का अपने लोगों से बात करना सम्मिलित होता है जो सृष्टि के सामान्य क्रियाकलापों से बाहर होते हैं।

महत्व। दूसरी बात यह है, सारे विशेष प्रकाशन मसीही नैतिक शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि सारे विशेष प्रकाशन हमारे लिए निर्देशात्मक हैं; सारा विशेष प्रकाशन वह स्तर है जिसके सदृश्य हमें बनना है। उदाहरण के तौर पर, ध्यान दें कि प्रेरितों के काम 17:28 में जब पौलुस ने अन्यजातिय कवि अरातुस और क्लेन्थेस को उद्धृत किया, तो उसने उनके शब्दों से यह भावार्थ निकाला जो सब मनुष्यों पर लागू होता है। प्रेरितों के काम 17:28-30 को सुनें:

> **जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम तो उसी के वंश भी हैं। सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं, कि ईश्वरत्व, सोने या रूपे या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों। इसलिये परमेश्वर**

> आज्ञानता के समयों में अनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। (प्रेरितों के काम 17:28-30)

इन शब्दों "हम तो उसी के वंश भी हैं" के अन्यजातिय उद्गम के बावजूद, परमेश्वर के आधिकारिक प्रेरित के रूप में पौलुस द्वारा उनके इस्तेमाल ने इस उद्धृण को मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर के विशेष प्रकाशन में बदल दिया, और उन्हें एक स्थिर स्तर बना दिया, एवं "हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने" के लिए प्रेरित किया।

और यदि अन्यजातिय उद्गम के शब्दों का इतना महत्व हो सकता है तो निश्चय ही वह प्रकाशन जो अधिक विशेष है, हमें और अधिक प्रेरित करता है। वास्तव में, हम इस निष्कर्ष को पवित्रशास्त्र में ही पूरा होते हुए देखते हैं। उदाहरण के तौर पर, सुनिए यिर्मयाह 25:8-9 में यरूशलेम के निवासियों से तब परमेश्वर ने क्या कहा था जब उन्होंने बार-बार उसके भविष्यवक्ताओं को ठुकरा दिया था:

> तुम ने जो मेरे वचन नहीं माने, इसलिये सुनो, मैं उत्तर में रहने वाले सब कुलों को बुलाऊंगा, और अपने दास बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को बुलवा भेजूंगा; और उन सभों को इस देश और इसके निवासियों के विरुद्ध और इसके आस पास की सब जातियों के विरुद्ध भी ले आऊंगा; और इन सब देशों का मैं सत्यानाश कर के उन्हें ऐसा उजाड़ दूंगा कि लोग इन्हें देख कर ताली बजाएंगे; वरन ये सदा उजड़े ही रहेंगे। (यिर्मयाह 25:8-9)

क्योंकि लोगों ने परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं की बात सुनने से इनकार कर दिया था, इसलिए परमेश्वर ने उनके विरूद्ध कठोर वाचायी दण्ड देने की चेतावनी दी थी, और यह कहके भी चिताया था कि वह सदैव के लिए नाश कर देगा यदि वे पश्चाताप नहीं करते। जब परमेश्वर बाइबलीय भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों जैसे अपने आधिकारिक प्रतिनिधियों के माध्यम से सत्य को प्रकट करता है तो यह विशेष प्रकाशन पूरी तरह लागू होने वाला होता है।

अब, हमारे समय में हमारे पास कोई जीवित आधिकारिक प्रेरित और भविष्यवक्ता नहीं हैं। परन्तु हमारे पास बाइबल है, जो सब समयों के सब लोगों पर लागू होती है। क्योंकि पवित्रशास्त्र आज हमारे लिए सबसे प्रासंगिक प्रकार का विशेष प्रकाशन है, इसलिए अगले दो अध्यायों में हम इस पर विस्तृत रूप में चर्चा करेंगे। परन्तु अब, हमें हमारा ध्यान अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन की ओर लगाना चाहिए, जो मनुष्यों के माध्यम से परमेश्वर का प्रकाशन है।

अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन

यद्यपि धर्मविज्ञानियों के लिए "अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन" के बारे में बात करना आम नहीं है, परन्तु यह विचार कि परमेश्वर स्वयं को मनुष्यों में और के द्वारा प्रकट करता है, सामान्य प्रकाशन के एक भाग के रूप में मुख्यधारा प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान के द्वारा पहचाना जा रहा है। दूसरे शब्दों में, हम यहां पर एक नए प्रकार के प्रकाशन की वकालत नहीं कर रहे हैं, परन्तु उसी प्रकाशन को श्रेणीबद्ध करने के भिन्न तरीके को दर्शा रहे हैं जिन्हें धर्मविज्ञानियों ने सदियों से स्वीकारा है।

उदाहरण के तौर पर, विश्वास के वेस्टमिनस्टर अंगीकरण, के अध्याय 1, भाग 10 को सुनें:

> सर्वोच्च न्यायी, जिसके द्वारा धर्मों के सारे विवादों का निर्धारण किया जाता है, और परिषदों की सभी विधियों, प्राचीन लेखकों के मतों, मनुष्य की धर्मशिक्षाओं, और

> निजी आत्माओं को परखा जाता है, और जिसके निर्णय में हमें शरण लेनी है, वह कोई और नहीं परन्तु पवित्रशास्त्र में बात करने वाला पवित्र आत्मा है।

अंगीकरण बताते हैं कि धर्मों के सारे विवादों में सर्वोच्च न्यायी पवित्र आत्मा है, और कि पवित्र आत्मा के निर्णय का सबसे आश्वस्त अगुवा पवित्रशास्त्र है। परन्तु ध्यान दें कि ऐसे अंतिम प्रकट स्तर, जिसके द्वारा अन्य सबका न्याय होता है, के रूप में पवित्रशास्त्र को देखने में अंगीकरण इन अन्यों को व्यर्थ या अवैध के रूप में बाहर नहीं कर देता है। बल्कि अंगीकरण उन सब अन्य स्रोतों का महत्व समझता है जो यह बताता है। परमेश्वर परिषदों, प्राचीन लेखकों, मनुष्यों की धर्मशिक्षाओं, और निजी आत्माओं को अपनी इच्छा प्रकट करने में इस्तेमाल करता है, यद्यपि उनके निर्धारण पवित्रशास्त्र के अधीन होने जरूरी हैं।

हम इन मानवीय निर्णयों को "अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन" के रूप कह सकते हैं। इनमें से कोई भी इतिहास या सृष्टि की सरल प्रस्तुति नहीं है, और न ही कोई परमेश्वर की ओर से सीधी अलौकिक बातचीत है। इसकी अपेक्षा, प्रत्येक में मनुष्यों के माध्यम से परमेश्वर का प्रकाशन सम्मिलित होता है, फिर वे चाहे लोगों के समूहों द्वारा सामूहिक धर्मविज्ञानी निष्कर्ष हों, या एक व्यक्ति के निर्णय हों, या विश्वासियों के भीतर पवित्र आत्मा की आंतरिक अगुवाई और प्रकाशन हो। जैसा कि हमने सामान्य और विशेष प्रकाशन के साथ किया था, उसी प्रकार हम मसीही नैतिक शिक्षा के लिए अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन की जटिलता के बारे में, और फिर इसके महत्व के बारे में बात करेंगे।

सबसे पहले, अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन को दो मुख्य श्रेणियों में बांटा जा सकता है: अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन के भौतिक पहलू, और अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन के आंतरिक पहलू।

भौतिक। अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन के भौतिक पहलुओं में ऐसी बातें सम्मिलत होती हैं: मानवीय अस्तित्व; व्यक्तिगत और सामूहिक मानवीय निर्णय; मानवीय स्वभाव। हम प्रकाशन के प्रकार के रूप में मानवीय अस्तित्व को समझ सकते हैं क्योंकि मानवजाति को परमेश्वर के स्वरूप में रचा गया है। अर्थात्, एक भाव में हम सब परमेश्वर के प्रतिरूप हैं। मनुष्यजाति वह स्वरूप है जो परमेश्वर की महिमा और वैभव को प्रदर्शित करते हैं। और क्योंकि हम उसके चरित्र को दर्शाते हैं, इसलिए हम लोगों की ओर देखते हुए परमेश्वर के बारे में बहुत सी बातें सीख सकते हैं।

हमारा दूसरा बिंदू, कि व्यक्तिगत और सामूहिक निर्णय अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन का एक रूप है, इस बात से गहराई से जुड़ा हुआ है कि हम परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए हैं। सुनिए उत्पत्ति 1:26 में मनुष्यजाति की सृष्टि के इतिहास को मूसा ने किस प्रकार लिखा है:

> फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें। (उत्पत्ति 1:26)

जब हम पहली बार इस विचार को पवित्रशास्त्र में देखते हैं तब यद्यपि हम इस बात से कई परिणाम निकाल सकते हैं कि हम परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए हैं, तो इससे जुड़ा हुआ अर्थ यह है कि परमेश्वर मनुष्यों को अधिकार देता है जिससे वे जगत पर शासन करें। इसका एक आशय यह है कि जब मनुष्य अपने अधिकार का प्रयोग करते हैं, तो हम परमेश्वर के चरित्र को प्रकट कर रहे हैं।

इसे क्रियान्वित करने के एक अन्य तरीके को हम उत्पत्ति 2:19 में देखते हैं जहां हम ये शब्द पढ़ते हैं:

> और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भाँति के पक्षियों को रचकर आदम के पास ले आया कि देखें, कि वह उनका क्या क्या नाम रखता है, और जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया। (उत्पत्ति 2:19)

परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले अधिकार को मनुष्य द्वारा क्रियान्वित करने के इस उदाहरण को पहली बार हम पवित्रशास्त्र में पाते हैं। और इस उदाहरण के विषय में हम जो कुछ भी कहें, कम से कम यह सत्य है कि जब आदम ने जानवरों के नाम रखे तो निर्णय लेने के बारे में सोच रहा था और निर्णय ले रहा था। अतः यह कहना सही है कि मनुष्य जब परमेश्वर से दिए गए अधिकार के बारे में सोचता है और उसे काम में लाता है, तो हम परमेश्वर के चरित्र पर ध्यान दे रहे हैं।

और यह इस प्रकार का कार्य जिसके बारे में विश्वास का वेस्टमिनस्टर अंगीकरण बता रहा है जब यह "परिषदों... प्राचीन लेखकों के मतों, मनुष्य की धर्मशिक्षाओं, और निजी आत्माओं" के बारे में बात करता है।

उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम में हम पढ़ते हैं कि कलीसिया के अगुवे मसीह में आए हुए अन्यजातियों के कार्यों के प्रति निर्णय लेने के लिए यरूशलेम में एकत्रित हुए थे। उस महासभा ने जिसमें पतरस और पौलुस जैसे प्रेरितों ने भाग लिया और समर्थन दिया, उस समय की कलीसियाओं को उनके निर्णयों को स्पष्ट करते हुए पत्र भेजा। प्रेरितों के काम 15:28-29 में लूका ने लिखा कि उनके पत्रों में ये शब्द लिखे थे:

> पवित्र आत्मा को, और हम को ठीक जान पड़ा, कि इन आवश्यक बातों को छोड़, तुम पर और बोझ न डालें कि तुम मूरतों के बलि किए हुओं से, और लहू से, और गला घोंटे हुओं के मांस से, और व्यभिचार से, परे रहो। (प्रेरितों के काम 15:28-29)

ध्यान दें कि यरूशलेम महासभा ने अपने लिए और पवित्र आत्मा के लिए भी बोलने का दावा किया। उनकी समझ यह थी कि परमेश्वर उनके सामूहिक प्रयासों को कलीसिया के सही कार्यों को निर्धारित करने के लिए इस्तेमाल कर सकता था। कहने का अर्थ यह नहीं है कि कलीसियाई महासभाएं त्रुटिरहित हैं परन्तु केवल यह दर्शाना है कि हमारे पास यह विश्वास करने का बाइबलीय उदाहरण है कि परमेश्वर अपने एकत्रित किए हुए लोगों को सत्य को प्रकट करने के लिए इस्तेमाल करता है।

ऐसा तब भी होता है जब कलीसिया छोटे समूहों में एकत्रित होती है। उदाहरण के लिए, मत्ती 18:16, 20 में यीशु के शब्दों पर ध्यान दें:

> हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से ठहराई जाए। क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं वहां मैं उन के बीच में होता हूँ। (मत्ती 18:16, 20)

यीशु ने सिखाया कि जहां दो या तीन मसीही सही रूप में कलीसियाई अनुशासन के किसी विषय पर एकमत होते हैं, तो यीशु उनके उस अधिकार की क्रिया को समर्थन देता है जो उसने कलीसिया को दी है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकालना सुरक्षित होगा कि जब मसीही छोटे समूहों में मिलते हैं और निर्णय देते हैं, तो उनके निर्णय त्रुटिरहित नहीं होते, परन्तु यह कहना फिर भी सही होगा कि परमेश्वर अपने लोगों का सत्य में मार्गदर्शन करने के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक निर्णय देता है।

मानवीय अस्तित्व और निर्णय के अतिरिक्त, परमेश्वर मानवीय व्यवहार को भी बाहरी प्रकार के अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन के रूप में इस्तेमाल करता है। हम तब इसे पवित्रशास्त्र में बार-बार देखते हैं जब

बाइबलीय लेखक अपने पाठकों को दूसरों के व्यवहार का अनुसरण करने के लिए उत्साहित करता है। उदाहरण के लिए, 1 थिस्सलुनिकियों 1:6-7 पर ध्यान दें:

> तुम. . . हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे। यहां तक कि मकिदुनिया और अखया के सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने। (थिस्सलुनिकियों 1:6-7)

पौलुस ने उसके उदाहरण का अनुसरण करने और दूसरों के समक्ष उदाहरण बनने के लिए थिस्सलुनिकियों के विश्वासियों की प्रशंसा की। जब पौलुस और थिस्सलुनिकियों के लोगों ने परमेश्वर के चरित्र को प्रदर्शित किया, तो यह प्रकाशन का रूप था। फलस्वरूप, यह नैतिक व्यवहार के लिए मानक या स्तर बन गया।

आंतरिक। अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन के इन भौतिक प्रकारों के अतिरिक्त, आंतरिक प्रकार के अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन भी हैं। यद्यपि हम कई मार्गों को देख सकते हैं जिनमें पवित्र आत्मा मनुष्यों के भीतर परमेश्वर के बारे में सत्य को प्रकट करने हेतु कार्य करता है, परन्तु हम दो पर ध्यान देंगे। पहला, हम उस पर ध्यान देंगे जिसे धर्मविज्ञानियों ने पारंपरिक रूप से "प्रकाश" कहा है। दूसरा, हम पवित्र आत्मा की "आंतरिक अगुवाई" की जांच करेंगे जो विवेक जैसी बातों में प्रकट होती हैं।

जब हम पवित्र आत्मा के प्रकाश के बारे में बात करते हैं, तो हम समझ के स्वर्गीय वरदान की बात कर रहे हैं जो परमेश्वर विश्वासियों, और यहां तक कि अविश्वासियों को भी देता है। जब पवित्र आत्मा एक व्यक्ति के मन को प्रकाशित करता है, तो वह उस व्यक्ति को वह योग्यता या ज्ञान देता है जिसकी उसमें पहले कमी थी। प्रकाश का एक सबसे स्पष्ट उदाहरण मत्ती 16:15-17 में पाया जा सकता है जहां हम इस वर्णन को पाते हैं:

> (यीशु ने पूछा) परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। (मत्ती 16:15-17)

शमौन पतरस ने अपने आप ही यह नहीं जाना था कि यीशु ही मसीह था, और न ही उसने दूसरे लोगों से सीखा था। इसकी अपेक्षा, परमेश्वर ने सीधे ही यह ज्ञान पतरस के समक्ष प्रकट किया था।

निसंदेह, पतरस स्वयं यीशु के साथ रहा था, और यीशु के बारे में उसका व्यक्तिगत ज्ञान उस प्रक्रिया का भाग था जिससे वह इस बात को समझ पाया था कि यीशु ही मसीह था। परन्तु अनेक अन्य लोग जिन्होंने इस ज्ञान को प्राप्त नहीं किया था वे भी यीशु के साथ रहे थे। फर्क यह था कि पवित्र आत्मा ने पतरस में इस समझ को लाने में उसके भीतर कार्य किया था।

पौलुस ने विश्वासियों के प्रकाश के विषय को 1 कुरिन्थियों 2 में सीधे-सीधे संबोधित किया, जहां उसने पद 11 और 12 में ये शब्द लिखे:

> मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उस में है? वैसे ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा। परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। (1 कुरिन्थियों 2:11-12)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पौलुस का कहना यह था कि यद्यपि विश्वासी और अविश्वासी दोनो एक ही प्रकार की बातों को समझ सकते हैं, परन्तु वे उन्हें एक रूप में नहीं समझते। प्रकाशन के बारे में हमारे ज्ञान में सब लोग रूकावट का अनुभव करते हैं क्योंकि वे सीमित रचित प्राणी हैं। परन्तु पवित्र आत्मा विश्वासियों में कार्य करता है जिससे वह सुसमाचार और परमेश्वर के सत्य के अलौकिक ज्ञान को प्राप्त कर सकें। इसके साथ-साथ सभी विश्वासियों का उद्धारकर्ता के रूप में यीशु में विश्वास और भरोसा होता है जो सीधे पवित्र आत्मा से आता है। जैसा कि पौलुस ने फिलिप्पियों 1:29 में लिखा:

> **क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि... उस पर विश्वास करो। (फिलिप्पियों 1:29)**

यहां "यह अनुग्रह हुआ" के लिए यूनानी शब्द का अर्थ है "मुफ्त में दिया गया"। पौलुस का बिंदू यह नहीं है कि फिलिप्पियों को विश्वास करने का अवसर दिया गया था, बल्कि यह कि परमेश्वर ने यीशु में उनके विश्वास के रूप में उन्हें मुफ्त उपहार दिया। इसके साथ-साथ सभी विश्वासियों का उद्धारकर्ता के रूप में यीशु में विश्वास और भरोसा होता है जो सीधे पवित्र आत्मा से आता है।

रोचक बात यह है कि बाइबल भी हमें सिखाती है कि परमेश्वर अविश्वासियों को भी प्रकाशित करता है। हम पहले ही देख चुके हैं कि परमेश्वर सामान्य प्रकाशन के माध्यम से सभी अविश्वासियों को सत्य बताता है, परन्तु पौलुस के अनुसार, परमेश्वर प्रकाशन के द्वारा भी अविश्वासियों को सत्य के बारे में बताता है। रोमियों 2:14-15 में पौलुस के शब्दों को पढ़ें:

> **फिर जब अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो... वे व्यवस्था की बातें अपने अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते हैं... और उन की चिन्ताएं परस्पर दोष लगाती, या उन्हें निर्दोष ठहराती है। (रोमियों 2:14-15)**

दूसरे शब्दों में, परमेश्वर अविश्वासियों समेत सब लोगों में उसकी व्यवस्था के मूल ज्ञान को रखता है। सामान्य प्रकाशन के बारे में हमारे ज्ञान के बावजूद भी, हम सहजता से जानते हैं कि कुछ चीजें सही होती हैं और कुछ गलत, और हमारा विवेक इस बात की गवाही देता है।

इससे बढ़कर, पवित्र आत्मा भी वह प्रदान करता है जिसे प्रायः "आंतरिक अगुवाई" कहा जाता रहा है। प्रकाश के विपरीत, जो कि मुख्य रूप से बौद्धिक होता है, आंतरिक अगुवाई संवेदनशील और अंतर्ज्ञानी होती है। यह वह सबसे आम तरीका है जिसमें पवित्र आत्मा परमेश्वर के चरित्र के बारे में सत्य को प्रकट करने हेतु लोगों के अंदर काम करता है। हम आंतरिक अगुवाई को हमारे व्यक्तिगत विवेक में स्पष्टता से देखते हैं और इसके साथ-साथ प्रायः हमारी ऐसी अवर्णनीय भावनाओं, जैसे कि परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम ये कार्य करें, में भी इसे देखा जा सकता है। पौलुस ने फिलिप्पियों 2:13 में इस आंतरिक अगुवाई को दर्शाया जब उसने लिखा:

> **क्योंकि परमेश्वर ही है, जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है। (फिलिप्पियों 2:13)**

ध्यान दें कि पौलुस यहां पर वह नहीं बता रहा जो हम जानते और विश्वास करते हैं, बल्कि वह जिसकी हम इच्छा और अभिलाषा करते हैं, और वह जो हमारे कार्यों को प्रेरित करता है। यह भी प्रकाशन का एक रूप है क्योंकि यह हमारे प्रति परमेश्वर के चरित्र के विचारों और अंतर्ज्ञान को दर्शाता है। और जैसा कि

अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन के सब रूपों के साथ होता है, क्योंकि यह परमेश्वर के चरित्र को प्रकट करता है, इसलिए यह एक महत्वपूर्ण स्तर है जिसकी आज्ञा हमें माननी है और जिसके सदृश्य हमें बनना है।

हमने परमेश्वर के प्रकाशन की तीन श्रेणियों पर ध्यान दिया है, और हमने देखा है कि किस प्रकार परमेश्वर का संपूर्ण प्रकाशन हमें वह मानक प्रदान करता है जो परमेश्वर के चरित्र को प्रकट करते हैं। परन्तु इस समय हम प्रकाशित मानकों की इन तीनों श्रेणियों की एकता को देखेंगे।

एकता

सामान्य, विशेष और अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन एक-दूसरे से घनिष्ठता से जुड़े हुए हैं। सभी एक ही परमेश्वर को प्रकट करते हैं और इसलिए सभी समान स्तर को प्रकट करते हैं, और सभी लागू होने वाले और आधिकारिक हैं। परन्तु इसका हमारे लिए क्या अर्थ है जब हम बाइबलीय निर्णय लेने का प्रयास करते हैं? जैसा कि आपको याद होगा, बाइबल पर आधारित हमारे निर्णय लेने का नमूना यह है: "नैतिक निर्णय में एक व्यक्ति द्वारा परिस्थिति पर परमेश्वर के वचन को लागू करना है।" इस नमूने के प्रकाश में, परमेश्वर के सामान्य, विशेष, और अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन की एकता दर्शाती है कि हम हमारे समक्ष उपस्थित सारे प्रकाशन को देखते हुए हमारे नैतिक निर्णय लें। निसंदेह, नैतिक शिक्षा के विषय में हमें निर्देशित करने के लिए पवित्रशास्त्र पूरी तरह से पर्याप्त है। सामान्य और अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन हमें परमेश्वर के ऐसे किसी नए चरित्र की जानकारी नहीं देते जो कि पवित्रशास्त्र में न हो। परन्तु हम उसे और अधिक स्पष्टता से समझ पाएंगे जो पवित्रशास्त्र हमें सिखाता है जब हम परमेश्वर के शेष प्रकाशन से इसकी तुलना करेंगे। वास्तव में, पुस्तकों और भाषाओं के सामान्य प्रकाशन के बिना हम पवित्रशास्त्र के विशेष प्रकाशन को प्राप्त भी नहीं कर सकते। और निसंदेह, पवित्र आत्मा का प्रकाश, अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन पवित्रशास्त्र के संदेश को समझने के लिए आवश्यक है। अतः परमेश्वर के प्रकाशन के सभी रूपों का इस्तेमाल करना हमें काफी अंतर्ज्ञान प्रदान करता है जब हम पवित्रशास्त्र को हमारे जीवन पर लागू करते हैं।

निष्कर्ष

इस अध्याय में हमने मसीही नैतिक शिक्षा में निर्देशात्मक दृष्टिकोण के दो पहलुओं की जांच की है। हम देख चुके हैं कि स्वयं परमेश्वर सारे नैतिक व्यवहार का परम स्तर है और कि उसका चरित्र सारे मनुष्यों को उसका अनुसरण करने के लिए प्रेरित करता है। हम यह भी देख चुके हैं कि उसके वचन या प्रकाशन के बिना स्वयं परमेश्वर को जाना नहीं जा सकता, इसलिए हमें हमारे प्रकाशित या व्यावहारिक स्तर के रूप में उसके प्रकाशन को उसके सारे रूपों में स्वीकार करना चाहिए।

जब हम नैतिक शिक्षा के हमारे विचारों को विकसित करने का प्रयास करते हैं, तो हमें सदैव परमेश्वर के चरित्र से मार्गदर्शन लेना चाहिए, जैसे कि यह प्रकृति और इतिहास में, पवित्रशास्त्र में और मनुष्यों में प्रकट होता है। जब हम इन विचारों को हमारे प्रतिदिन के जीवन पर लागू करते हैं, तो हम स्वयं को ऐसे नैतिक निर्णय लेने में और अधिक तैयार पाएंगे जो परमेश्वर को पसंद आने वाले हों और जो उसके लोगों के लिए आशीष लाते हों।